Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

सिंधुघाटी की सभ्यता व ऋग्वेदीय समाजः एक अध्ययन

Dr. Santosh Kumar
Assistant Professor
Department of History
S.N Sinha College (M.U)
Tekari, Gaya

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

भारत का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। यहीं के इतिहास के निर्माण में भौगोलिक विशेषताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भौगोलिक प्रभाव के कारण अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का उदन और विकास हुआ। ऐतिहासिक काल के आरंभ होने के पूर्व ही भारत में प्रागैतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक संस्कृतियों का उदय हो चुका था। भारत के विभिन्न भागों में पाषाणकालीन पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण युग) संस्कृतियों के विकास के प्रमाण प्रकाश में आए हैं। इसी प्रकार ताम्रपाषाणिक, ताम्र, कास्य और लौहयुगीन संस्कृतियों के भी प्रमाण मिले हैं। ऐतिहासिक काल के आरंभ से लेकर आधुनिक युग तक का क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध है।

भारतीय इतिहास की जानकारी के स्त्रोत विविध प्रकार के है। प्रागैतिहासिक एवं आद्य इतिहास की जानकारी हमें पुरातात्विक साक्ष्यों से मिलती है। विभिन्न उत्खनों एवं अन्वेषणों के दौरान पत्थर, बातु के हथियार, औजार, बस्तियों एवं नगरों के प्रमाण मिले हैं, जिनसे इस काल की सभ्यता-संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है। ऐतिहारिस्क काल से साहित्य प्रमुख स्त्रोत बन जाते हैं। संस्कृत, पालि, प्राकृत में लिखित साहित्य का एक बडा भंडार उपलब्ध है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- वेद महाकाव्य (रामायण और महाभारत), पुराण तथा ऐतिहासिक एवं अर्द्ध ऐतिहासिक साहित्य। यूनानी और चीनी यात्रियों (मेगास्थनीज, फाहियान, हेनसांग) के यात्रा-विवरणों से भी इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। इसी प्रकार अभिलेख, मुहर, सिक्के, पुरावशेष कलाकृतियों और प्राचीन स्मारकों से भी भारत के आरंभिक इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में सिंधुघाटी या हड़प्पा की सभ्यता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण तक, जब तक इस सभ्यता की जानकारी नहीं मिली थी. विद्वानों की धारणा थी कि प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रांरभ आर्यों की सभ्यता से ही हुआ। 1921

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

में दयाराम साहनी द्वारा हडप्पा तथा राखालदास बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ों के उत्खननों से एक नई सभ्यता प्रकाश में आई। इस सभ्यता के अवशेषो के प्रकाश में आने से यह निश्चित हो गया है कि आर्यों के आगमन के पूर्व ही भारत में पूर्ण विकसित नागरिक समाता का उदय हो चुका था। अब यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भारत की सभ्यता भी मिक्ष और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं की तरह ही अति प्राचीन है। इसे सिंधुपाटी की सभ्यता इसलिए कहा गया कि इसके प्रारंभिक अवशेष एवं प्रमुख केंद्र सिंधुघाटी में ही प्रकाश में आए। आगे चलकर इस सभ्यता के अवशेष सिंधुघाटी के बाहर के क्षेत्रों में भी पाए गए। तब हडप्पा को, जो इस सभ्यता को प्रमुख केंद्र था और जो सबसे पहले

प्रकाश में आया था, आधार मानकर इस सभ्यता का नामकरण हडप्पा संस्कृति अथवा हड़प्पा की सभ्यता कर दिया गया।

हड़प्पा-संस्कृति की हमारी जानकारी एकमात्र पुरातात्विक प्रमाणों पर ही आधुत है। इस काल की कोई भी साहित्यिक सामग्री उपलब्ध नहीं है, जिससे इस सभ्यता के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। यद्यपि इस सभ्यता के निवासी लेखन कला से परिचित थे और उनके लेख भी हमें मिले हैं. तथापि इन्हें अभी तक संतोषाप्रद ढंग से पढ़ा नहीं जा सका है। फलत, हमें उत्खननों से प्रापा सामग्री एवं भवनों के अवशेषों के आधार पर ही इस सभ्यता के विविध पहलुओं का आययन करना पड़ता है।

वैदिक साहित्य से जानकारी मिलती है कि आरंभिक आर्य भारत के किस क्षेत्र में बसे हुए थे और उनका प्रसार किस दिशा में हुआ। ऋग्वेद से यह आभास मिलता है कि भारत आने के पश्चात आर्य सप्त सैघव प्रदेश में बसे। इस प्रदेश की सात प्रमुख नदियों का मी उल्लेख किया गया है। ये नदियों अविभाजित पंजाब से कुछ अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रवाहित थी। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की चार प्रमुख नदियों, कुना (काबुल), सुवास्तु (स्वात), क्रमु (कुर्रम) और गोमती (गोमाल) के अतिरिक्त सिंधु सरस्वती और दृषद्वती (धरगर) तथा शतुद्रि (सतलज), विपासा (व्यास), परूष्णी (रावी), असिवनी (ग्रेनाव) और वितस्ता (झेलम) नदियों का उल्लेख किया गया है। सिंधु और सरस्वती नदियों की महिमा का बखान इस ग्रंथ में देवाने योग्य है। सप्तसैधव प्रदेश का उल्लेख पंजाब की पौच नदियों और राजस्थान की सरस्वती और दृषद्वती नदियों के लिए किया गया है। इस विवरण से पता चलता है कि प्रारंभिक आर्यों का प्रसार अफगानिस्तान से लेकर सैवव प्रदेश तक था। इसी क्षेत्र में प्रारंभिक सूक्तों की रबना हुई। गंगा एवं यमुना नदियों का भी यहापि एकाम बार उल्लेख किया गया है. तथापि इस क्षेत्र में आर्य

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पूरी तरह परिचित नहीं थे। गंगा को ऋग्वेदिक आर्यों की पूर्वी सीमा माना गया है। हिमालय पर्वत का भी उल्लेया किया गया है।

उत्तर-वैदिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि आर्यों का प्रत्तार इस समय पूर्वी प्रदेशों में होन लगा। उनका भौगोलिक ज्ञान वैदिक काल की अपेक्षा ज्यादा विकसित था। उत्तर-वैदिक ग्रंथों में अनेक समुद्री, नदियों एवं पर्वतों का उल्लेख किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य इस समय दाक संपूर्ण भारत से परिचित हो चुके थे। इसीलिए संपूर्ण भारत की कई सांडों में विभका किया गया था। ये शखंड थे ब्राह्मवतं या आर्यावर्त, मध्यदेश और दक्षिणापथ। उत्तर-वैदिक काल में आर्य पंजाब की सीमा से बाहर निकलकर अन्य भागों में भी फैल रहे थे। कुरुक्षेत्र आर्य संस्कृति का केन्द्र बन रहा था। गंगा-यमुना का मध्यवती क्षेत्र महत्वपूर्ण बन चुका था। हिमालय और विंध्य के मध्य का सारा भाग आर्थी के अधीन हो चुका था। किंय प्रदेश उत्तर वैदिककालीन आर्यों की दक्षिणी सीमा थी। ऋग्वेद से इस सभ्यता के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है। इसी युग के दौरान आर्य सभ्यता के मूल तत्वों की स्थापना हुई. जिनका विकास उत्तर-वैदिक काल में हुआ।

पाश्चात्य विद्वान् और उनके अनुगामी भारतीय विद्वान ऋग्वेद को प्राचीनतम मानकर उसके आधार पर अपनी पूर्वाग्रह ग्रसित बुद्धि से तत्कालीन समाज की जो रूप-रेखा प्रस्तुत करते हैं।

उनके अनुसार आर्य बाहर से आक्रान्ता के रूप में भारत आए। वे कबीलाई अवस्था में रहते थे और भोजन की खोज में घूमते थे। इसी क्रम में वे परस्पर तथा दूसरों से युद्ध भी करते थे। उनका कहीं स्थायी निवास नहीं था क्योंकि वे गृह-निर्माण की कला से अनभिज्ञ थे और कृषि कर्म ज्ञान का भी अभाव था। उस समय न तो समाज का वर्गीकरण हुआ था और न ही विवाह प्रथा का प्रचलन। कहने का तात्पर्य है कि आगीदिक समाज अज्ञानी, असभ्य जंगली, अविकसित, पशुचारक और कबीलाई अवस्था में था। लेकिन वेदरूपी मानसरोवर में कमलदलवात् उपनिषदादि ग्रन्थ अनादिकाल से आर्यावर्त के प्राणियों के हृदयस्थ अज्ञानान्धकार को दूर कर उनके जन्मजन्मान्तरार्जित प्रस्तुप्त ज्ञान को उद्दीप्त कर कर्तव्यत्ता की ओर अग्रसर करने में अपूर्व है।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

इस तथ्य को इतिहास के माध्यम से प्रस्तुत कर हम भारतीयों को प्राचीनतम ग्रन्थों से विमुगा कर राष्ट्र को कमजोर करने का प्रयास है। क्या प्राचीन संस्कृति के संरक्षण से राजाभोज, विक्रमादित्य, राम, रघु नल आदि कालीन भारत स्वर्णयुग के रूप में नहीं था? ही हम कह सकते हैं कि आपसी विद्वेषों एवं अपने कर्तव्यों में प्रमाद के कारण पराधीनता को हमें स्वीकारना पड़ा और 200 (दो सी) वर्षों में कूटनीति के द्वारा जिन परस्पर विद्वेषी सम्प्रदाय, जाति, आक्षेप-प्रत्याक्षेप तथा दास्तापूर्ण संस्कार के साथ ही भारतीय संस्कृति को बर्बाद किया गया, वह भारतीयों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए। सर्वप्रथम संस्कृति में विकृतियों को अर्थ के बल पर उत्पन्न किया गया, संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी को बढ़ावा दिया गया, अन्त में नालन्दा विश्वविद्यालय में सुरक्षित प्राचीन ग्रन्थों को नष्ट भ्रष्ट किया गया। प्राचीन ग्रंथों से विमुख तथा ज्ञान-विज्ञान के मूलस्त्रोतों से पृथक आजीविका के नूतन साधनों की ओर प्रवृत्त हम भारतीय अपनी संस्कृत भाषा को विधिवत् समझने में अक्षम अपनी पुरातन सभ्यता की उपेक्षा कर रहे हैं। विश्व स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है, तो क्या चीन, जर्मन जैसे राष्ट्र अपनी भाषा एवं संस्कृति पालन कर विकसित नहीं है? वस्तुतः अंग्रेज चले गये परन्तु हमारे रक्त में अंग्रेजियत भरकर चले गये। फलतः माश्चात्य विद्वानों द्वारा समर्थित सिद्धान्त को तुच्छ स्वार्थवश कुछ भारतीय इतिहासकार भी ऋग्वेदीय समाज को असभ्य अविकसित कह कर अंग्रेजियत के प्रभाव से ग्रसित न केवल आगामी बच्चों एवं बच्चियों को हमारे सद्-ग्रन्थों से विमुख किया जा रहा है, अपितु इस राष्ट्र को कमजोर कर पतन की ओर अग्रसर किया जा रहा है जो राष्ट्र विरोधी मन्तव्य है।

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और दर्पण में प्रतिबिम्ब वैसी ही दिखती है जैसी की वस्तु रहती है। ऋग्वेद आर्यों का साहित्य है। अतः ऋग्वेद के आधार पर आर्यों के ज्ञान-विज्ञान के रहन-सहन की सच्ची प्रतिबिम्ब देखी जा सकती है। हालांकि वेद में किसी लौकिक इतिहास का वर्णन नहीं है. फिर भी थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं। ऋग्वेद में वर्तमान ज्ञान का स्तर यदि निम्न कोटि का होगा या विज्ञान के विरूद्ध होगा तो हमें यह मान लेने में कोई आपत्ति न होगी कि तत्काललीन समाज अविकसित अवस्था में थी। लेकिन यदि उसमें वर्तमान ज्ञान का स्तर उच्च कोटि का और आधुनिक विज्ञान से समर्थित होगा, तो पूर्वाग्रह को छोड़कर इतिहासकारों को मान लेना चाहिए कि ऋग्वैदिक भारतीय समाज अविकसित अवस्था में न होकर उच्च कोटि का था। आधुनिक जीवन से उनका किसी भी स्थिति में निम्न स्तर नहीं था। कंबल मौखिक विवेचन से नहीं, बल्कि ऋग्वेद के उदाहरणों से देखें कि ऋग्वैदिक भारतीय समाज के बारे में सच्चाई क्या है?

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

जो इतिहासकार यह कहते हैं कि ऋग्वैदिक समाज कबीलाई अवस्था में था और उसको गृह-निर्माण की जानकारी नहीं थी, उनको गलत साबित करने के लिए निम्नलिखित दो मंत्र पर्याप्त है।

राजानावनभिदुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे।

सहस्त्रयूणे आसाते।।

अर्थात हे दोहकर्मरहित जनो। तुम उन लोगों को जानों जो निश्चल, श्रेष्ठ हजार खम्मों से बने हुए सना भवन में बैठते हैं।'

शतमश्मन्मयीनाम् पुरामिन्द्रो

व्यास्वत्। दिवोदासाय दाशुषे।।

अर्थात्त जो राजा पत्थर से निर्मित सैकडों नगरों को विशेष प्रकार से काटे. वही विजयी हो सकता है।

जब हमारा खम्बों पर आधारित और पत्थर से निर्मित भवन का स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद में है तो इतिहासकारों की यह धारणा स्वत ही निर्मूल हो जाती है कि तत्कालीन समाज को गृह-निर्माण का ज्ञान नहीं था। अपितु ऋग्वैदिक आर्यों को गृह निर्माण का सम्यक ज्ञान था।

कुछ इतिहासकार यह भी गलत धारणा पाल रखे है कि प्रारमिक आर्यों में विवाह प्रथा का प्रचलन नहीं था. लेकिन स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध से जनसंख्या की वृद्धि होती रही। इतिहासकारों की यह धारणा भी निम्नलिखित मंत्र से खंडित हो जाती है।

'क्यूरिय पतिमिच्छन्त्येय इ वहाते महिषीमिषिराम्।'

(0-5/37/3)

अर्थात जो पुरुष पति की कामना करनेवाली क्यू से विवाह करता है, वह उसे अपनी रानी बनाता है।

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद प्रथम मंडल में 125वें एवं 179वें सूक्त का देवता अर्थात् वर्णनीय विषय ही 'दम्पति' है जिसका शाब्दिक अर्थ विवाहित पति-पत्नी होता है। इन दोनों सूक्तों में विस्तारपूर्वक विवाह से सम्बद्ध वर्णन है। इसके लिए ऋग्वेद का मंत्र भी द्रष्टव्य है। अतः स्पष्ट है कि ऋग्वेद समाज में विधिपूर्वक विवाह की प्रथा प्रचलित थी।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

प्रातयाँ वाणा रथ्येव बीराऽजेव यमा बरमा सचेथे। मेने इव तन्वा शुम्भमाने दंपतीय क्रतुविदा जनेषु ।।

(ऋग 2.232)

अर्थात हे वर और वधू। तुम दोनों रथ में जुटे दो अश्यों के समान या रथो में दो पहियों के समान एक साथ मिलकर प्रातः से ही कार्यों में व्याप्त होकर वीर्यवान् अनुत्पन्न अनादि दो आत्माओं के समान परस्पर एक-दूसरे के उपर प्रेमयुक्त होकर यम नियम के पालक एवं जितेन्द्रिय होकर श्रेष्ठ कार्य करो और धन प्राप्त करो। दम्पत्ति जीवन यापन करते हुए उत्तम कर्म एवं श्रेष्ठ ज्ञान को प्राप्त करो।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि ऋग्वैदिक समाज कृषि कार्य से अनभिज्ञ था और इसकी पुष्टि में तर्क देते हैं कि ऋग्वेद में अन्न शब्द नहीं पाया जाता है। लेकिन उसकी दृष्टि ऋग्वेद पर नहीं पड़ती है जहाँ भी और अन्न दोनों शब्द स्पष्टतः पड़े हुए है और अन्यत्र नमसा या नम शब्द के धात्वर्थ से भी अन्न शब्द का ग्रहण होता है। अन्न के लिए सिबाई की जरूरत होती है। सिंचाई के लिए ऋऋग्वेद में कहा गया है कि जिसके उपर चक्र लगा हो ओर चारों ओर भूमि हो तथा नीचे पानी के द्वार हो. ऐसे अक्षय भंडार रूप कूप को अन्न के लिए सिंचाई के काम में लाते है।

अक्षौर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमश्व बहु मन्यमानः।

अत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः ।

अर्थात् जीवन निर्वाह के लिए वैज्ञानिक ढंग से कृषि कर अर्थात् परिश्रमी बन। नीति के मार्ग से कमाये हुए धर्म को बहुत मानता हुआ तू उसमें ही रमण कर अर्थात् सतोष रखकर प्रसन्न रह। एस उत्तम व्यवसायरूप कृषि में ही गौ आदि पशु भी सुरक्षित रहते हैं।

ऋग्वेद में इस तरह की सिंचाई के वैज्ञानिक साधन एवं कृषि कार्य का स्पष्ट उल्लेख है तब इतिहासकारों की मारणा को सत्य नहीं माना जा सकता है कि ऋग्वेदीय समाज को कृषि कार्य का ज्ञान नहीं था।

कुछ इतिहासकार ऋग्वैदिक समाज को कबीलाई अवस्था का मानकर यह कहते हैं कि तैसी स्थिति में समाज का वर्गीकरण सम्भव नहीं था। लेकिन ऋग्वेद में समाज के वर्गीकरण अथवा वर्ण व्यवस्था का स्पष्ट वर्णन है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहु राजन्यः कृत।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

उक्त तदस्य यद् वैश्यं पद्मया शूद्रो अजायत।

अतः ऋग्वैदिक समाज के वर्गीकृत न होने की मान्यता भी गलत प्रमाणित होती है। ऋग्वैदिक समाज सुन्दर एवं सम्यक रूपेण चार वर्षों में वर्गीकृत था।

ऋग्वेद में कहा गया है 'प्रजा के हित में विविध प्रकार के सम्पूर्ण सुखों की व्याख्या एवं व्यवस्था करने के लिए तीन सभा की स्थापना करे, जिसमें व्रतपालक, राजनीति के ज्ञाता, विज्ञानवान और सूर्य के समान अपने ज्ञान से प्रकाशित जन हों। यदि आज के संदर्भ में इसकी तुलना करें तो लोकसभा, राज्यसभा एवं न्याय सभा के रूप में समझा जा सकता है। ऋग्वेद के अन्य सूक्तों एवं मंत्रो में भी यह इस तरह के राजनीतिक एवं प्रशासक व्यवस्था का वर्णन मिलता है। इस प्रकार तीन सभाओं द्वारा शासित समाज को पशुचारक या कबीलाई अवस्था का बतलाना सत्य को झुठलाना है।

वैदिक भारतीय समाज की धार्मिक स्थिति प्रायः सर्वविदित है। फिर भी संक्षिप्त जानकारी दे देना आवश्यक है।

तत्कालीन समाज में रोगों की निवृत्ति हेतु सूर्य की प्रार्थना की जाती थी। श्रुति कहती है हे अखण्ड नियमों के पालन करने वाले आदित्य हमारे रोगों को दूर करो हमारी दुर्गति का दमन करो तथा पापों को दूर हटा दो।"

'पुनर्ददधरूनता जानता सं गमेमहि"

अर्थात् हम दानीशील पुरुष से विश्वासघातादि न करने वाले से और विवेक विचार-ज्ञानवान् से सत्संग करते रहे।

इदं वचः शतसः ससहस्त्रमुदम्नये जनिषीष्ठ द्विवर्माः ।8

अर्थात महर्षि वशिष्ठ हजार गायों के अधिपति और विद्या तथा कर्म में महान् थे। ऋग्वेदीय ऋचाओं के गवेषण से ज्ञात होता है कि पर्यन्य सूक्त के पाठ से शीघ्र अनावृष्टि दूर होती है और यथेच्छ वर्षो होती है, जिससे सनी वनस्पतियों तथा औषधियों का प्रादुर्भाव होता है. और सभी प्रकार का दुर्भिक्ष दूर हो जाता है।

अनश्नतैतज्जप्तव्यं वृष्टिकामेन यत्नतः।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

पञ्चरावेऽप्यतिक्रान्ते महती वृष्टिमाप्नुयात् ।।

मानवधर्म का जितना उच्क्तम उद्देश्य ऋग्वेद में है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

समानी व आकृतिः समाना हृदयानि वः

समानमरतु वो मनो यथा व सुसहासती।।

हम सबके जीवन का लक्ष्य एक ही हृदय और मन एक हो, ताकि मिलकर जीवन में उत्स एक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

यक्ष आग्वैदिक समाज का मुख्य भार्मिक कर्तव्य था। यज्ञ में धर्म के साथ विज्ञान का अनूठा समन्वय है. क्योंकि यज्ञ वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित बायुमंडल के शोध नार्थ चार्मिक कार्य था और आज भी है। ऋग्वैदिक समाज बहुदेवतावादी न होकर एक ईश्वर को मानता था। जैरा कि ऋग्वेद में कहा गया है एक ही ईश्वर को ज्ञानी जन अनेक नामों से पुकारते है। मानवधर्म ऐसा उच्चतम. श्रेष्ठतम और वरणीय स्वरूप क्या आज के समाज में ज्ञात होता है? वैदिक ऋचायें हमें सुख-शान्ति, समाज में समृद्धि सेवा भावना, सामंजस्य, सहयोग, सत्याचारण, संवेदना से परिपूर्ण हृदय और मननशील मनुष्य बनने की ओर उत्प्रेरित करती है। इन समस्त गुणों से सम्पन्न समाज को विवेकशून्य कहना राष्ट्र की पुरातन सद्यन्धों से हमे दूर करने का प्रयास ही कहा जायेगा।

यदि ऋग्वेद के अध्ययन के आधार पर तत्कालीन वैज्ञानिक ज्ञान की पर्चा की जाय तो अलग से पुस्तकें लिखी जा सकती है या फिर विस्तृत निबंध लिखे जा सकते हैं। लेकिन विस्तार में न जाकर कुछेक उदाहरणों से ही इतिहासकारों को मिध्या धारणाओं का खंडन करना पर्याप्त होगा।

ऋग्वेद में कहा गया है. “हे शीघ्रगामी शक्तियों। सुखपूर्वक ले जानेवाले यान में तीन वजतुल्य कलाचक्र को तथा वह तीन स्तम्मी से स्तम्मित हों। ऐसे विमान को चन्द्रमा की यात्रा आरम्भकरने के क्रम में सभी निश्चित से जाने की तीन रात्रि एव तीन दिन में उसे वहीं ले जाया जा सकता है।" इसके अतिरिक्त रथ यानी बिजली से चलित बान का वर्णन है। 'विमान तथा जलयान का भी वर्णन वैदिक भारतीय समाज में द्रष्टव्य है। इसके अलावे चिकित्सा के क्षेत्र में भी वैदिक भारतीय समाज की स्थिति अच्छी थी। टूटी हुई टांगों के बदले लोहे की कृत्रिम दांग (पैर) प्रत्यारोपित करनेका प्रमाण प्राप्त होता है" तो नेत्र के शल्य चिकित्सा तथा वृद्ध को युवा करने का वर्णन भी मिलता है।" ऋग्वेद विहित अश्वत्थ-

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

विज्ञान, शक्रध्वनि के अतिरिक्त 'अग्निपोमात्मक जगत् इस वैदिक घोषणा के तथ्य को समझने में अभी वैज्ञानिकों को शताब्दियी लगेंगी। परमाणु विज्ञान के चरम सीमा समझी जाती है, परन्तु वस्तुतः वह विज्ञान की इति नहीं, अपितु 'अथ है। कथित न्यूट्रॉन और प्रोट्रोन नामक परमाणु के विश्लिष्ट अन्तिम दोनों अश वेदोका अग्नि एवं सोमतत्व के ही स्थूलतम प्रतिनिधि हैं। यह मानकर विज्ञानवादी केवल एनर्जी मात्र कहने को विवश है। बास्तव में वे दोनों अग्नि और सोम के ही स्थूललम अत्यणु है। यह परमाणु विज्ञान का चरम बिन्दु नहीं, किन्तु प्रवेश द्वार मात्र है। पंचीकरण प्रक्रिया के संदर्भ इनका सूक्ष्मतम विवेचन समपुलका होता है। ऋग्वेदीय यज्ञशाला में चार वैज्ञानिकों का जो उल्लेख प्राप्त होता है वह आज के वैज्ञानिकों का जो उल्लेख प्राप्त होता है वह आज के वैज्ञानिकों के लिए अत्यधिक दुर्लभ है। तत्कालीन वैज्ञानिकों में अऋत्विक, अध्वर्यु, उद्गाता एवं ब्रह्मा ये प्रसिद्ध है जिनके निरीक्षण में सम्पूर्ण मनोरथों की पूर्ति होती थी। इनका विश्लेषण ऋग्वेद में द्रष्टव्य है।

वैदिक नारतीय समाज के उपर्युक्त उदाहरणों के आलोक में इतिहासकारों की समी मिथ्या धारणाएँ खंडित हो जाती है। अतः इतिहासकारों को तत्संबंधी अपने मिध्या पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सत्यपक्ष का अवलम्बन करना बाहिए। सत्य यह है कि ऋग्वैदिक आर्य पूर्णतः शिक्षित, सुसभ्य, ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता, गृह निर्माण में दक्ष, कृषि कार्य के जानकार, विवाहित जीवन जीनेवाले, वर्गीकृत समाज में सुचारू राजनीति के संचालन तथा जीवन के सम्पूर्ण तत्वों से अमित धार्मिक जन थे। इसी से उन्हें आर्य अर्थात श्रेष्ठ कहा गया है। जिन इतिहासकारों के द्वारा ऋग्वेदीय समाज पर उक्त भ्रमात्मक एवं अज्ञानतापूर्ण कथन प्रस्तुत किए जाते हैं उन्हें ऋग्वेदीय ऋचाओं की सम्यक जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए अन्यथा भ्रमपूर्ण विवेचन से न केवल समाज में पुरातन ग्रन्थों से अगामी युवा पीढ़ी को विमुख करना है अपितु राष्ट्र को पतन की ओर ले जाने की कुचक्र है।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

संदर्भ :

1. ऋग्वेद 2/41/5
2. ऋग्वेद 4/30/20
3. ऋग्वेद 8/72/10
4. ऋग्वेद 10/90/12
5. ऋग्वेद 10/90/12
6. ऋग्वेद 8/18/10
7. ऋग्वेद 5/51/15
8. ऋग्वेद 7/8/6
9. ऋग्वेद 10/191/4
10. आऋग्वेद 1/164/46
    विप्रा बहुधा बदनित।
11. ऋग्वेद 3/54/1 तथा 3/54/13
12. ऋग्वेद 4/36/1 तथा 1/116/4
13. ऋग्वेद 1/116/15
14. अग्वेद 1/117/13

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

Dr. Santosh Kumar